(167) (P)
648
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1259/7.6.91

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 648

82

891.431
Sa71 R

राष्ट्रीय चमक

जिसमें

चुने हुए जोशीले आदर्श-पूर्ण भजन तथा एक बार
पढ़ने से ही तबियत फड़क उठनेवाली
कविताओं का संग्रह है।

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक

रामचन्द्र सराफ,

मुहल्ला नन्दनसाहुका,

काशी

प्रथम बार ४०००]

[मूल्य -)
सैकड़ा ४)

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
30 MAR. 1931
DEL

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 648
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

राष्ट्रीय चमक

(१)

उठो बीर अब असहयोग पर हो जाओ बलिदाना।
असहयोग में चित्त लगाओ, तिरंगे झंडे के नीचे आओ।
भारत माँ की बन्द छुड़ाओ, गर चाहो कल्याना॥
आँख मूँद क्यों पड़े हुये हो,नींद त्याग नहिं खड़े हुये हो।
गुलामी की बेड़ी में जकड़े हुये हो, ऐ भारत सन्ताना॥
भारत माता दुखी तुम्हारी, आशा पूर्ण तक राह तुम्हारी।
जेल भरन की करो तयारी, जो भारत की शान बचाना॥
स्वर्ग कामना जो हो मन में, असहयोग के आओ रन में।
होवे नाम देखो त्रिभुवन में, गर गोली का बनो निशाना॥
फिर पछताओ अवसर बीते, देश भक्ति रस क्यों नहीं पीते।
नहीं फिर होवें बड़े फजीते, जो बमलट की सीख न माना॥

(२)

देश पर जो अब तक अत्याचार हुए हैं।
बदला चुकाने के लिये तैय्यार हुए हैं॥
अफसोस तो ये है भाई हैं जबर करते।
गरदन पर वार करने को तलवार हुए हैं॥

हम लोग जान देते हैं स्वराज के लिये ।
यह लाल पगड़ी बाँध दावेदार हुए हैं ॥
गोली चलाते हम पर लाठी को मारते ।
उनके समझ में हम सब बेकार हुए हैं ॥
देगा न साथ आपका वो मित्र विदेशी ।
जो भाई पर सितम करने को तैय्यार हुए हैं ॥
घर आपके क्या होता तुमको नहीं खबर ।
भाई तुम्हारे अन्न से लाचार हुए हैं ॥
यह नौकरशाही मान लो बमलट की सीख को ।
दुश्मन के देखो आप खिदमतगार हुए हैं ॥

(३)

हमें देश भक्ति दिखाना पड़ेगा ।
ये जुल्मों की हस्ती मिटाना पड़ेगा ॥
रहना अगर जो तुम्हें हो यहाँ पर ।
तो आजाद भारत कराना पड़ेगा ॥
खाते हमारा जुल्म करते हम पर ।
हमें इसका बदला चुकाना पड़ेगा ॥
खद्दर को पहनो ये तुमको हुक्म है ।
नहीं लण्डन लेडी ले जाना पड़ेगा ॥
तुझे दर्द आती नहीं है सितमगर ।
और कहते हो गोली चलानी पड़ेगा ॥

गोली चलाओ या तोपें लगाओ।
मगर पीछे भारत मनाना पड़ेगा ॥
जबर करते हम पर हमारे ही भाई।
उन्हें देखो पीछे पछताना पड़ेगा ॥
कहते हैं काशी ये मान लो कहना।
खुदा के यहाँ मुँह दिखाना पड़ेगा ॥

(४)

जीते हैं जब तलक हम भारत का दम भरेंगे।
सौ जन्म पैदा होके हित देश के मरेंगे ॥
हरगिज़ न पाँव पीछे टलने का अब हमारा।
सब देश भाइयों का ता उम्र दुख हरेंगे ॥
पावर है उसको इतना फाँसी तलक चढ़ादे।
पर हम अहिंसा व्रत से हरगिज़ नहीं टलेंगे ॥
कातिल तुम्हारी हरकत हमसे सही न जाती।
देखें ये आप कबतक हमपर जबर करेंगे ॥
इस वक्त देश पर जो जुल्म हो रहा है।
जाकर खुदा के आगे महशर में हम कहेंगे ॥
लेवें गवाह में हम जलियान वाला बाग।
पेशावर वाला किस्सा दरपेश हम करेंगे ॥
ये देश भाइयो तुम मादक पदार्थ छोड़ो।
बमलट हमेशा सबसे येही कहा करेंगे ॥

(५)

गरीबों को अब हम सताने न देंगे ।
ये तुमको हुकूमत चलाने न देंगे ॥
खिलाते हो हमको अगर रूखी रोटी ।
मटन चाय तुमको भी खाने न देंगे ॥
रवाना करो लेडियाँ सूबे लंदन ।
पर तुमको तो आराम पाने न देंगे ॥
लेजाके घी और गल्ला हमारा ।
तुम्हें मौज़ हरगिज़ उड़ाने न देंगे ॥
रहे बस मुबारक तुम्हें वो तुम्हारी ।
शराबों की बोतल यहाँ आने न देंगे ॥
हिन्द को चाहो तो कुर्ता सिलालो ।
अब नेकटाई कालर लगाने न देंगे ॥
विलायती चीनी घी वेजिटेविल ।
सिगरेट इत्यादि बिकाने न देंगे ॥
भरोसे न रहना कहीं और किसके ।
अब "काशी" में दंगा मचाने न देंगे ॥

(६)

किसकी बुलन्द आवाज़ ने भारत को अब जगा दिया ।
सोया पड़ा था बेखबर किसने इसे उठा दिया ॥
गुलामी में मेरे थे कसे चंगुल में मेरे थे फँसे ।
रस्ता इन्हें आज़ादी का गांधी ने अब बता दिया ॥

क्या चैन से गुजरती थी ह्विस्की शराब ढलती थी ।
फाँकेकशी के दर्जे तक अब हमको बस पहुँचा दिया ॥
विलायती कपड़ा त्यागकर खद्दर का कर चार सब ।
लंकाशायर को एक दम मिलकर के बस रुला दिया ॥
करके जबर भी हारे हम आन्दोलन न होता कुछ भी कम ।
ि ढ़के दमन से और भी लंदन को बस हिला दिया ॥
माईगाड क्या करेंगे अब, या भूखे ही अब मरेंगे सब ।
इसने तो मेरे एक दम नाको में दम पहुँचा दिया ॥
गर योंही बीते कुछ माह, होजाय लंडन खुद तबाह ।
बमलट ने सच्चा हाल यह लिखकर तुम्हें सुना दिया ॥

(७)

कांकुल की तरह आज जो बल खाए हुए हैं ।
थोड़ी सी हुकूमत पै इतराए हुए हैं ॥
परवाह नहीं है देश, धर्म, नीत की इनको ।
स्वारथ का भूत सर पर चढ़ाए हुए हैं ॥
जिस हाँड़ी में खाते हैं करते हैं उसमें छेद ।
घर अपना अपने हाथ जलाए हुए हैं ॥
बातों में आकर गैर के बनते हैं निर्दयी ।
डंडा ये बेकसों पर उठाए हुए हैं ॥
एक रोज ये रहे मेरे गले का हार ।
अब कंकड़ हो के आँख का सताए हुए हैं ॥

बुद्धी हुई है नष्ट बस संगत प्रभाव से।
देश भाइयों का रिश्ता ये भुलाए हुए हैं॥
गरचे जो हो जाय अक्ल इनकी ठिकाने।
हिन्द क्या लन्दन का राज पाए हुऐ हैं॥

(८)

थे हम भी कभी जाँबाज़ वतन,
ऐ चर्ख़ ! हमें बरबाद न कर।
जिंदा हैं मगर यह ज़ीस्त नहीं,
अब और सितम ईजाद न कर॥
ज़र और जवाहर सारा लुटा,
सब शान गई, नादार बने।
फैशन पै लुटाते मुल्क का ज़र,
नाशाद को क्यों तू शाद न कर॥
जब गांधीजी ने ज़ोर दिया,
जेलों के उधर दरवाज़े खुले।
हम आहो बुका से काम जो लें,
देते हैं डपट फ़रियाद न कर॥
गोलमेज़ का तोफ़ा दिया जो हमें,
नादान खुशी से उछलने लगे।
क्या जाल बिछाया हिकमत का,
बातोंमें फ़क़त आज़ाद न कर॥

कांग्रेस ने जो देखा रंग बुरा,
दिया डंका बजा आज़ादी का।
हे कृष्णमुरारी कर तू मदद,
मज़लूम को अब बेदाद न कर॥

(६)

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलामखाना।
आज़ाद होगा होगा, आता है वह ज़माना॥
खूँ खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना॥
क़ौमी तिरंगे झण्डे पर जाँ निसार अपनी।
हिन्दू मसीह मुसलिम गाते हैं यह तराना॥
अब भेड़ और बकरी बनकर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना॥
परवाह अब किसे है जेल ओ दमन की प्यारो।
इक खेल हो रहा है फाँसी पै झूल जाना॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
भारत के वास्ते है मंजूर सर कटाना॥

(१०)

यारो, वतन का तुमको जिस दिन ख़याल होगा।
तब दुश्मनों से अपना बाँका न बाल होगा॥

पीटेंगे पेट अपना इंगलैंड के जुलाहे ।
कपड़ा बनाने में जब हासिल कमाल होगा ॥
जाना विदेश में जब अनाज का रुकेगा ।
तब देखना हमारा घर माल माल होगा ॥
जिस दिन करोगे दिल से बहिष्कार तुम विदेशी ।
"दे दो स्वराज्य हमको" यह क्यों सवाल होगा ॥

(११)

होनेवाला काम जो है वह भी हो ही जायगा ।
जुल्म करते करते जालिम खुद बखुद मिट जायगा ॥
कौन कहता है कि उनसे मामला हो जायगा ।
हाँ ये माना रोज़े महशर फैसला हो जायगा ॥
था किया ऐसा जुल्म अन्याय रावण दुष्ट ने ।
राम ने जैसा किया था वैसा ही अब हो जायगा ॥
कंस से बदला लिया था कृष्ण ने अन्याय का ।
इंडियन यूरोपियन में वैसा ही हो जायगा ॥
कृष्णजी के कर की मुरली रामचंदर का धनुष ।
गाँधीजी के कर में चर्खा चक्र-सा हो जायगा ॥
सत्य से होती बिजय थी सब तरह के युद्ध में ।
सत्य पर आरूढ़ हो स्वराज हो ही जायगा ॥

(१२)

जिसकी मुद्दत से तमन्ना थी वह दिन आने को है ।
फिर बहार आने को है ये गुञ्चा खिल जाने को है ॥

काट गये हैं दासता की बेड़ियाँ सी० आर० दास।
लाजपत से "लाज" "पति" भारत की रह जाने को है॥
अब मुरस्सा होगा प्यारा हिन्द मोतीलाल से।
फिर "जवाहर" से खजाना अपना भर जाने को है॥
स्वर्ग से आकर करें तेरा तिलक भारत "तिलक"।
कर्मयोगी गान्धी अब वह शुभ समय लाने को है॥
जंग औ खूँ रेज़ियों से हाय भारत लुट गया।
बल अहिंसा से वही अधिकार फिर पाने को है॥

(१३)

जो वक्ते शिकवा खुदा से
महेशर में रोके हम अश्कबार होंगे।
तो सुन के भारत कि दुर्दशाओं को
रंज परवर दिगार होंगे॥
करोगे फरियाद कैसे रोकर
खुदा के हमसर बरोज़ महेशर।
ये चन्द क़तरे भी आँसुओं के
न मिलने वाले उधार होंगे॥
महात्माजी को क़ैद रखने से
आन्दोलन न दब सकेगा।
अभी तो तैंतिस करोड़ गांधी
इस हिन्द में आशकार होंगे॥

हज़ारों मोती के होंगे जौहर
और लाखों होंगे जमा जवाहर।
औ मरने वाले वतन पै अपने
करोड़ों क्या वेशुमार होंगे॥
तुम्हारे तीरे सितम को मेहमाँ
बना के दिल में जो रख रहे हैं।
ये मेरी आहों में हो के शामिल
तुम्हारे सीने के पार होंगे॥
ग़ज़ब में आकर न बदलो तीवर
चला के ख़ंजर भी आजमालो।
क़सम ख़ुदा की ये सच ही मानो
ज़रा न हम बेक़रार होंगे॥
जो क़त्ल करने की है तमन्ना
तो ये भी दिल में ख़याल रखना।
हमारे ख़ूँ के हर एक कतरे
स्वराजे उम्मीदवार होंगे॥
हमारे भारत के बच्चे बच्चे
बढ़ा के उत्साह कह रहे हैं।
कि हिन्दमाता के क़दमों में
सर चढ़ा के हम जाँ निसार होंगे॥
जो छोटे बच्चों के नर्म दिल में

भी गोलियों को चुभा रहे हो।
तुम्हारे सीने में चुभने वाले
हजारों बिच्छू के आर होंगे ॥
बने हैं जाँबाज़ हम भी "शायक़"
बवक्त़ जिबहा भी देख लेना।
कि ज़ेरे खञ्जर भी जानशीनों के
सर ये बीसों हज़र होंगे ॥

१४—ग़ज़ल

इलाही तुम भी ख़याल रखना गवाह तुमको बना रहे हैं।
हम हिन्दवालों को पाके दुर्बल वो हर तरह से सता रहे हैं॥
सुना है फ़रियाद पर वो मेरे ग़ज़ब के तेवर चढ़ा रहे हैं।
तो सर कटाने की आर्जू में हम आज मक़तल में जा रहे हैं॥
अजब है उत्साह सबके दिल में कि लोग जेलों में जा रहे हैं।
जो कल थे मख़मल पै सोनेवाले वो आज कंबल बिछा रहे हैं॥
हम हिंद माता का ऋण चुकाने को खून अपना बहा रहे हैं।
मगर उन्हें क्या जवाब होगा जो हम पै गोली चला रहे हैं॥
हम हिन्द माँ के हैं ऐसे बच्चे जो जान अपनी लड़ा रहे हैं।
और एक भारत सपूत वो हैं जो पेश डंडों से आ रहे हैं॥
जो मेरे महफ़िल के बामुक़ाबिल वो गन मशीनें लगा रहे हैं।
तो हम भी आहों की ताक़तों से उन्हीं को हस्ती मिटा रहे हैं॥

फ़लक के नीचे से हट वो जायें अभी से उनको चेता रहे हैं।
हम अपनी आहों से इस समय आस्माँ को भी डगमगा रहे हैं॥
जो मिल के तैंतिस करोड़ भारत में आहो गिरियाँ मचा रहे हैं।
ये रोजे महशर को सोते फ़ितनों को आज ही से जगा रहे हैं॥
शमा की सूरत में दिल जलाकर वो लेके गुलगीर आ रहे हैं।
जो हिंद के हैं चिरागे रोशन बिचारे सर को कटा रहे हैं॥
वो जोश खाकर दमन को अपने जो चक्र अज़हद चला रहे हैं।
तो अहले शायक़ स्वतंत्रता के खुद अपने सर को झुका रहे हैं॥

महात्मा गांधी की ११ शर्तें

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें अमल में लाकर दिखाना होगा।
प्रजा के आगे तुम्हें भी साहब ! सर अपना अब तो झुकाना होगा॥
१ नशीली चीज़ें शराब, गाँजा, अफीम आदिक जो बुद्धि हरतीं।
मिटा के इनकी खरीद-बिक्री, दुकानें सारी उठाना होगा॥
२ हमारे सिक्के की दर को साहब ! घटा बढ़ा करके लूटते हो।
अब एक शिलिंग चार पेनी, ही भाव उसका बनाना होगा॥
३ लगान आधा करो जमीं का, किसान जिससे जरा सुखी हों।
महकमा इसका हमारी कौंसिल के ताबे तुमको रखाना होगा॥
४ फिज़ूल-खर्ची, बिला ज़रूरत, जो फौज पर हो रही हमारी।
अधिक नहीं गर तो आधा उसको, ज़रूर साहब घटाना होगा॥
५ बड़े-बड़े भारी-भारी वेतन, डकारते हैं जो आला अफसर।
उसे मुआफिक लगान आधा या उससे भी कम कराना होगा॥

६ स्वदेशी कपड़े करे तरक्की, विदेशी कपड़े न आने पावें।
विदेशी कपड़ों पै और महसूल, ज्यादा तुमको लगाना होगा॥
७ समुद्र तट का जहाज़ी वाणिज, न हाथ में हो विदेशियों के।
उसे हमारे महाजनों के, अधीन रखकर चलाना होगा॥
८ जिन्हें क़तल, या क़तल-इरादा, सज़ा मिली हो उन्हें न छोड़।
बक़ाया क़ैदी पोलिटिकल सब, तुरन्त साहब! छुड़ाना होगा॥
९ उठा लिये जायँ राजनैतिक, जो मामले चल रहे मुलक पर।
जो इकसौचौबिसदफा अलिफ है उसेतोबिलकुलमिटानाहोगा॥
१० अठारह का ऐक्ट रेगुलेशन तथा दफा ऐसी सब उठाकर।
हमारे भाई जो निर्वसित हैं, उन्हें वतन में बुलाना होगा॥
११ मुहकमा खुफिया-पुलिस उठा दो या करदो उसको प्रजाकेताबे।
हमें भी बंदूक और पिस्तौल बराय हिफाजत दिलाना होगा॥

मुद्रक
श्रीप्रवासीलाल वर्मा मालवीय,
सरस्वती-प्रेस, काशी